जीवन को सफल कैसे बनाएं ?

– मनोहर विद्यांलकार

जप

प्राप्त साधना के द्वारा सोम पान और इष्ट नाम का जप

शिशुंज ज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुभ्मन्ति विप्रं मरुतोगणेना ।

कविर्गीर्भि: काव्येन कवि: सन्त्सोम: पवित्रमत्ये तिरेभन् ।। साम १११५

ऋषि: – प्रतर्दनो देवो दासि: । देवता – पवमान: सोम: । छन्द: – त्रिष्टुप् ।

शब्दार्थ – जैसे (अज्ञानं शिशुं हर्यतं मृजन्ति) उत्पन्न होरहे शिशुको स्नान कराकर शुध्द और गोद में लेने की कामना योग्य बनाया जाता है, वैसे ही (मरुत:) प्राण साधना करनेवाले लोग (विप्रम्) कामनाओं को पूर्ण करनेवाले (हर्यतम्) कामनायोग्य प्रभू को (गणेन) संख्यान व चिन्तन द्वारा (शुभ्मन्ति) अपने हृदय में अलंकृत करते हैं ।

(कवि:) क्रान्तदर्शी प्रभू (काव्येन) वेद काव्य के द्वारा साधकके (पवित्रं रेमन् एति) हृदय में प्रेरणा करता हुआ आता हैं । तब (सोम:) सोम पान (वीर्यरक्षा) द्वारा शान्त मन बना स्तोता (रेमन्) अपने इष्ट नाम का जप करता हुआ (पवित्रम्) सब को क्रिया शील तथा पवित्र करने वाले प्रभू को (अति एति) अतिशयेन अपने समीप अनुभव करता है ।

निष्कर्ष – सत्कामनाओं की प्रेरणा देनेवाले, और उन प्रेरणाओं को पूर्ण करने वाले सोम प्रभू को प्राप्त करने का पहला कदम वीर्य की रक्षा तथा प्राण साधना के साथ इष्ट नाम का जप है । यज्ञानां जपय ज्ञोऽस्मि । गीता, अग्निहोत्र, देवपूजा, संगति करण या दान बाह्य या व्यक्त भौतिक यज्ञ है । जप अन्त: करण का यज्ञ है ।

स्मरण

परमेश्वर के इष्ट नाम का मानसिक स्मरण

पवमानमवस्य वो विप्रमभि प्रगायत । सुष्वाणं देववीतये । साम ११८८

ऋषि: असित: काश्यपो देवलोवा । देवता – पवमान: सोम: । छन्द: – गायत्री ।

इस मन्त्र में शान्तिपूर्वक सबको पवित्रतापूर्वक प्रगति की प्रेरणा देनेवाला सोम प्रभु, विषय वासनाओं से असंमृक्त, सूर्य के प्रकाश सदृशज्ञान के प्रकाश वालेज्ञानी तथा दिव्यगुणों के अभिलाषी ऋषि के माध्यम से उपदेश दे रहे हैं ।

शब्दार्थ – (अवस्यव:) रक्षा तथा प्रगति चाहनेवाले पुरुषो ! (देव वीतये) दिव्य गुणों के प्रप्ति के लिए (सुष्वाजम्) सदा प्रेरणा देनेवाले, (विप्रम) प्रयत्न करने पर उन प्रेरणाओं को पूर्ण करनेवाले, परिणामत: (पवमानम्) प्रगतिशील तथा पवित्र बनाने वाले प्रभू को अपने मनमें (अमि) सदा (प्रगायत) गुनगुनाते रहो –स्मरण करते रहो ।

निष्कर्ष – जप करने के बाद की स्थिती यह होनी चाहिए कि बिना जप किये अन्त: करण में उसका स्मरण सदा बना रहे । वाणी से बिना जपे भी उसका अन्त:करण परमेश्वरकी अनिर्वचनीय स्थिति से भरा रहे, जिससे उसके मन में कोई काम क्रोध लोभ का विचार उभरने ही न पाए ।

अर्थ पोषण – पवमान: – पूङ्गतौ, पूत्र् पवने । असित: – अ–न+सित:–विज् बन्धने । काश्यप:–कश्यप: पश्यको भवति – परमेश्वर: सूर्योवा नि. परमेश्वर के साक्षात् शिष्य होने से ज्ञानी तथा सूर्य सम तेजस्वी । देवल: – देवान् – दिव्य गुणान् लाति (ला आदाने) ग्रहण करने वाला तथा उनगुणों की दूसरों को शिक्षा देने वाला ।

आचरण

स्तुति स्तोता के जीवन में प्रत्यक्ष दीखने पर ही सफल होती है ।

युंक्ष्वा हि के शिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा ।
अथा न इन्द्र सोम पा गिरामुमश्रुतिं चर ।। साम १३४६
ऋषि: – मधुच्छन्दा वैश्वामित्र: । देवता – इन्द्र: । छन्द: – अनुष्टुप् ।

शब्दार्थ – हे (इन्द्र) इन्द्रियों को अपने वश में रखने की कामना वाले साधक ! (के शिना) ज्ञान द्वारा प्रकाश को लाने वाले ज्ञानेन्द्रियाश्वों को तथा (वृषणा हरी) शक्तिशाली कर्मे न्द्रियाश्वों को, जो (कक्ष्यप्रा) कोखों के मध्य में स्थित हृदय और छाती को ज्ञान और बल से संपृक्त करने वाले हैं, उन्हे (युंक्ष्वा) शरीर रुपी रथ में कस कर जो ता (अथ) तदन्तर (सोम पा) वीर्य रक्षण द्वारा सौम्य बनने की कामना से (गिरां उपश्रुतिम्) वेद वाणी के मन्त्रो की अन्तर्भावना को (आचर) अपने आचरण में धारण कर ।

निष्कर्ष – जितेन्द्रिय बनने वाले साधक ! तूने अपने इष्ट देवके जिस नाम से स्तुति की थी, और जिस नाम को हृदय में धारण किया था, उसी नाम के भावार्थ को जब तू आचरण में ले आएगा, तभी तेरी स्तुति पूर्ण होगी । यह स्तुति मांग न होकर परमेश्वर की कृपा रुप में प्रदत्त देनों के प्रति आभार रुप में धन्यवाद होगा । यदि आचरण में न उतारा तो यह स्तुति यारों की तरह दिखावा मात्र होगी ।

स्तुति

आभार प्रदर्शन या धन्यवाद रुप में स्तुति

इन्द्रमीशान मोजसामिस्तोमै रनुषत ।
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसी: ।। साम १२५२
ऋषि: – जेता माधुच्छान्दस: । देवता – इन्द्र: । छन्द: – अनुष्टुप् ।

अर्थ – (ओजसा ई शानम्) अपने ओज से ब्रह्मण्ड का शासन करने वाले (इन्द्रम्) ऐश्वर्यशाली – सर्व व्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की (स्तोमै: अनि) सदा साममन्त्रों द्वारा (अनुषत) स्तुति किया करो । क्योंकि (यस्य रातय: सहस्रम्) इसकी देनें, हजारों हैं, और प्रसन्नता देने के

लिए हैं। (उत वा सन्ति भूयसी:) अथवा हजारों से भी अधिक अनन्त हैं।

तं गाथया पुराण्या पुरानमभ्यनूषत।
उता कृपन्तधीतयो देवानां नाम विभ्रती:।। साम १६३३
ऋषि: – रेभसूनू काश्यपौ। देवता – पवमान: सोम:। छन्द: – अनुष्टुप्।

अर्थ – (धीतय:) ध्यान व धारणा करने वाले साधको ! (पुराण्या गाथया) सनातन वैदिक मन्त्रों के गायन द्वारा (पुनानम्) स्तोताओं के हृदयों को पवित्र करने वाले, सोम रक्षक (तं अमि अनूषत) उस प्रभू की सदा स्तुति किया करो। (उत) और (देवानां नाम विभ्रती:) दिव्य गुण नामधारी देवों के गुणों को धारण करनेवाली (धीतय: कृपन्त) ध्यान वृत्तियों को अपने आचरण द्वारा समर्थ बनाया करो।

निष्कर्ष – परमात्माके गुण प्रदर्शक नामों को अपने आचरण में लाकर स्वयं प्रभु के सच्चे भक्त बनो और अपने साथियों को भी सच्चा भक्त (आचरण से) बनाओ।

समिन्द्रेण वायुना सुत एति पवित्र आ। सं सूर्यस्य रश्मिनि:।। साम१०८२
ऋषि: – अमहीयु:। देवता – पवमान: सोम:। छन्द: – गायत्री।
(इन्द्रेण) इन्द्रियों के संयम (वशीकरण) के द्वारा
(वायुना) प्राणसाधना के द्वारा
(सूर्यस्य रश्मिनि:) सूर्योदय की रश्मियों के साथ

(सुत:) उत्पन्न हुआ सोम (वीर्य) (पवित्रे एति) हृदय और मस्तिष्क में पहुंचता है, और साधक को ऊर्ध्वरेता बना देता है। ऊर्ध्वरेता यह साधक ही साधना करते करते (पवमाने सोमे सम्–आ–एति) सब को क्रियशीलता प्रदान करके पवित्र बनानेवाले सौम्य प्रभु में समा जाता है।

निष्कर्ष – सूर्योदय से पूर्व जागकर इन्द्रिय संयम और प्राण साधना द्वारा हृदय और मस्तिष्क को पवित्र करके, उदित होते हुए सूर्य का सेवन करने वाला ऊर्ध्वरेता बनकर परमेश्वर में समा जाता है– मुक्त हो जाता है।

विश्वदानीं सुमन स:स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम्। ऋक् ६–५२–२
आवात वातु भेषजं शभु मयोभु नो हृदे। प्रण आयूषितारिषत्। साम १८४

*****